रवतर मत
18/11/2017

ध्यान संतुलित जीवन के लिए आधारस्तंभ

संवाददाता

रांची। ध्यान एवं कर्म के संतुलन से अभिप्राय दोनों को समान अनुपात में करना नहीं है, अपितु उचित अनुपात में करना है। प्रत्येक कार्य उचित समय पर उचित मात्रा में करना अनुभव एवं विवेक से आता है। जब हम अपने सारे कार्य ध्यान द्वारा प्राप्त अंतर्मुखी अवस्था में करते हैं तो हमारा विवेक जाग्रत रहता है और हमें सफलता प्राप्त होती है। स्वामी ईश्वरानन्द ने बताया कि ध्यान एवं उचित कर्म सन्तुलित जीवन के लिए आधारस्तम्भ है। वे बताते हैं कि गुरु में हमकों सदा मौन रहने वाले ईश्वर के मुखर रूप के दर्शन होते हैं। ईश्वर गुरु के माध्यम से ही हमारा मार्गदर्शन करते हैं। गुरु-शिष्य का संबंध बहुत शुद्ध एवं सूक्ष्म होता है। इसे अनुभव से ही समझा जा सकता है। माता-पिता का प्रेम भी गुरु के प्रेम के आगे फीका पड़ जाता है। पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण ही हमारी चेतना में गुरु के प्रति श्रद्धा एवं समर्पण की प्रेरणा जागृत होती है। गुरु हमारे मन की सफाई कर हमारे बुरे संस्कारों एवं अज्ञान का नाश कर देते हैं, और हमें इस योग्य बनाते हैं कि हमें ईश्वर की प्राप्ति हो सके। पारसमणि लोहे को सोने में बदल सकती है, परंतु उसे अपने समान पारसमणि नहीं बना सकती। गुरु महान हैं क्योंकि वह शिष्य को अपने समान बना देते हैं। गुरु के स्पर्श से शिष्य धन्य हो जाता है। गुरु कृपा बिना ब्रह्म ज्ञान नहीं हो सकता। उनकी यह कृपा आध्यात्मिक शल्य चिकित्सा के रूप में होती है।

लोगों को योग ध्यान कराते स्वामी जी